VAIDIC DHARMA SANSTHAN

वैदिक धर्म संस्थान

परंपराओं का पुनर्जागरण और विरासत का संरक्षण

हमारी गतिविधियाँ

पूजाएँ और हवन

- पूर्णता जायते इति पूजा – जो पूर्णता से उत्पन्न होती है, वही पूजा है।
- प्रशिक्षित वैदिक विद्वानों द्वारा उच्चारित पवित्र मंत्रों के माध्यम से प्राप्त पूर्णता की स्थिति, जो ध्यान की स्थिति उत्पन्न करती है – वह हमारी पूजा और हवन की पहचान है।

उत्सव

- वैदिक परंपराओं के अनुरूप उत्सव मनाए जाते हैं, जो आत्मा को उन्नत अवस्था में ले जाते हैं और समृद्धि लाते हैं।
- दुःख को मिटाकर पूरी दुनिया में शांति और आनंद का प्रसार करते हैं।
- भावनाओं को जागृत कर, आत्मा को नई ऊर्जा से भर देते हैं और प्राचीन ज्ञान को पुनः जीवंत करते हैं।

मंत्रोच्चार (जप)

- नियमित अंतराल पर आयोजित मंत्रोच्चार कार्यक्रम, जैसे श्री रुद्रम, आदित्य हृदय स्तोत्रम, कालभैरव अष्टकम, भगवद्गीता, ललिता सहस्रनाम आदि सिखाए जाते हैं।
- ये आपके शरीर के चारों ओर एक सुरक्षा कवच सा बना देते हैं।

पंडित प्रशिक्षण कार्यक्रम

- वैदिक परंपरा में पूर्णता के साथ पूजाएँ संपन्न कराने के लिए पंडितों को प्रशिक्षित करना।
- विभिन्न पूजाएँ, हवन, संस्कार, अनुष्ठान और व्रत करने के लिए पंडितों को प्रमाणित करना।
- प्रतिभागियों को 'आर्ट ऑफ लिविंग' ध्यान कार्यक्रम और स्वास्थ्य तकनीक भी सिखाई जाती है।

षोडश संस्कार

वे वैदिक परंपरा की मनुस्मृति और गृह्य सूत्रों में निहित गर्भ से लेकर मृत्यु तक के सोलह महत्वपूर्ण संस्कारों को सम्मिलित करते हैं।

- **गर्भाधान संस्कार** – एक विकसित आत्मा को ग्रह पर आमंत्रित करने का समारोह, जो समाज के लिए आशीर्वाद माना जाता है।
- **पुंसवन संस्कार** – गर्भावस्था के तीसरे या चौथे महीने में गर्भ की सुरक्षा और कल्याण के लिए किया जाता है।
- **सीमंतोन्नयन संस्कार** – वैदिक गोद भराई, गर्भावस्था के अंतिम तीन महीनों में संपन्न होती है।
- **जातकर्म संस्कार** – शिशु के जन्म का उत्सव और देवी सरस्वती के मंत्रों के माध्यम से पिता और बच्चे के बंधन को सुदृढ़ करता है।
- **नामकरण संस्कार** – शिशु के जन्म के 11वें दिन नामकरण का आयोजन।
- **निष्क्रमण संस्कार** – चौथे महीने में शिशु को पहली बार बाहर सूर्य के दर्शन के लिए वैदिक मंत्रों और शंख ध्वनि के बीच लाया जाता है।
- **अन्नप्राशन संस्कार** – छह से आठ महीने की उम्र में शिशु को पहली बार अन्न खिलाया जाता है।
- **चूडाकर्म संस्कार** – जिसे 'मुंडन' भी कहते हैं, शिशु के बाल काटना, यह शुद्धि, नवीनीकरण और विकास का प्रतीक है।
- कर्णवेधन संस्कार – कान छिदवाना, जिसे स्मृति बढ़ाने में सहायक माना जाता है।
- विद्यारंभ संस्कार (अक्षराभ्यास) – बच्चे को लेखन की शुरुआत कराना, गुरु के मार्गदर्शन में 'ॐ' से आरंभ।
- उपनयन संस्कार – बच्चों को गायत्री मंत्र में दीक्षित करना, उनकी बुद्धि और अंतर्ज्ञान को तीव्र करना।
- वेदारंभ संस्कार – वैदिक अध्ययन की शुरुआत।
- केशांत संस्कार – लड़कों के लिए यौवन में प्रवेश का संस्कार और लड़कियों के लिए ऋतुवती होने का संस्कार।
- समावर्तन संस्कार – स्नातक समारोह, विवाह और गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियों के लिए तैयार होने का प्रतीक।
- विवाह संस्कार – विवाह समारोह, जिसमें वर-वधू सात पवित्र वचन (सप्तपदी) लेते हैं।
- अंत्येष्टि संस्कार – अंतिम संस्कार, जो मृत्यु के समय किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए